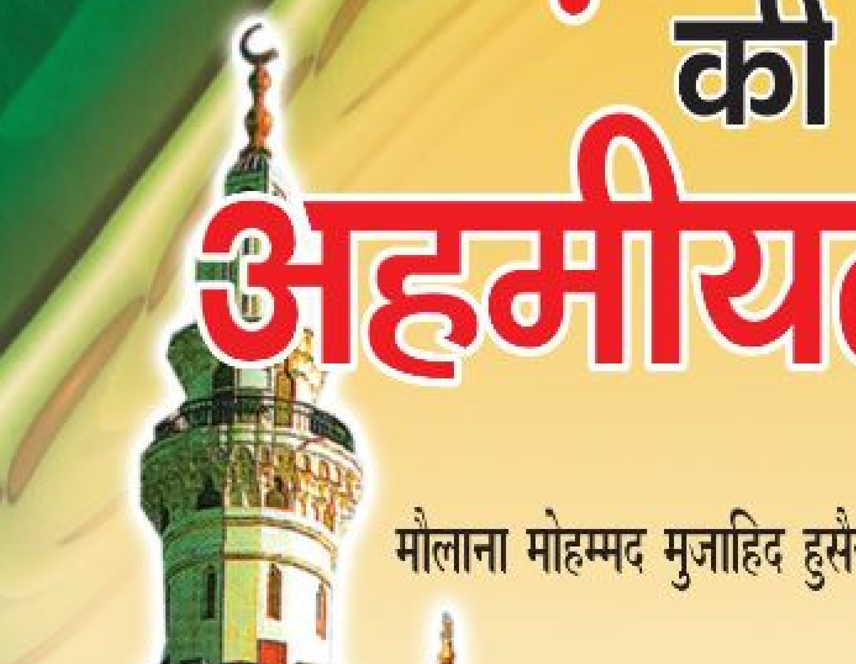
नमाज़ की अहमीयत

मौलाना मोहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी



नाशिर
मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया
ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
6 तालतला लेन, कलकत्ता-14 Mob.: +91 9830367155

कुरआनो ह़दीस़ की रोशनी में नमाज़ की अहमियत और उसके दूसरे मसाइल को उजागर करने वाली बेहतरीन तह़रीर

नमाज़ की अहमियत

मौलाना मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी

ऑल इण्डिया तबलीग़े सीरत, कोलकाता

हिन्दी

मुग़ीस़ अह़मद ख़ान क़ादिरी

अमेठी (यू0 पी0)

नाशिर

मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

6 तालतला लेन, कलकत्ता–14 Mob.: +91 9830367155

Rs. 30/-

S. No.	Title	Page
1	पेशे लफ़्ज़	4
2	नमाज़	5
3	नमाज़ की अहमियत और कुरआनी आयात	5
4	नमाज़ की फ़ज़ीलत और कुरआनी आयात	6
5	नमाज़ छोड़ने का अन्जाम कुरआने करीम की रोशनी में	7
6	नमाज़ की अहमियत अहादीस की रोशनी में	11
7	नमाज़ की फ़ज़ीलत अहादीस की रोशनी में	15
8	नमाज़ छोड़ने का वबाल अहादीस की रोशनी में	19
9	नमाज़ की बरकतें वाक़ियात की रोशनी में	22
10	गुनाहों से पाक होने का ज़रिया	23
11	पंजगाना नमाज़ों की बरकत	23
12	नमाज़ी के लिये फ़िरिश्ता दुआ करता है	24
13	जब एक सजदे की ये बरकत है तो...	25
14	नमाज़ और पुलसिरात	25
15	इबलीस की नाकामी	26
16	अगर जन्नत चाहते हो तो?	26
17	सही नमाज़ और सही तहारत जन्नत पहुँचाएगी	26
18	नमाज़ और इबादात को छोड़कर कोई अ़ज़ाब से बच नहीं सकता	27
19	नमाज़ शैतान का मुँह काला करती है	27
20	नमाज़ के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वसीयत	28
21	नमाज़ छोड़ने के नुक़सानात हक़ीक़त की रोशनी में	29
22	नमाज़ छोड़ने वाला मलऊ़न (ना–लाएक़) है	30
23	बे–नमाज़ी की नहूसत	30
24	शैतान का साथी	31

S. No.	Title	Page
25	मन्हूस दिन	31
26	नमाज़ के ख़िलाफ़ इबलीस की तहरीक	32
27	क़ब्र में शोले भड़क उठे	32
28	बे–वुज़ू नमाज़ पढ़ने पर अज़ाब	33
29	नमाज़ में सुस्ती पर मुसीबतें	34
30	जुमा की नमाज़ की फ़ज़ीलतें	36
31	जुमा छोड़ने पर वईदें	36
32	जमाअत की फ़ज़ीलत	37
33	जमाअत छोड़ने पर वईदें	38
34	अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	39
35	नमाज़ें क़ज़ा करने का वबाल	41
36	नमाज़ में इधर उधर देखने का अन्जाम	41
37	नमाज़ में इमाम से जल्दबाज़ी करने का अन्जाम	42
38	नमाज़ में चोरी का अन्जाम	43
39	नमाज़ियों को फलाँगने का वबाल	44
40	नमाज़ी के आगे से गुज़रने का वबाल	44
41	सफ़ की ख़ाली जगह भरने का सवाब	45
42	सफ़ सीधी न करने का अन्जाम	46
43	दुनिया की सबसे बेहतरीन जगहें तो वो मस्जिदें	47
44	नमाज़ के लिये चलने का सवाब	47
45	अल्लाह की रहमत के ख़ास हक़दार	48
46	मस्जिद आने वाला अल्लाह का मेहमान है	48
47	अल्लाह मस्जिद आने वालों की इज़्ज़त फ़रमाता है	48
48	घरों को नमाज़ से आबाद करो	49

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेशे लफ़्ज़

अल्लाह तआ़ला का हम मुसलमानों पर बेपनाह एह़सान है कि उसने हमें ईमान जैसी अनमोल दौलत अ़ता की। साथ ही दुनिया और आख़िरत में कामयाबो कामरान होने के लिये एक नुस्ख़ा भी तजवीज़ (ख़ास) फ़रमाया है कि नमाज़ पढ़ो इसी में मेरी ख़ुशनूदी है, यही मेरे मह़बूब की आँखों की ठण्डक और तुम्हारी मेराज है। इसी के ज़रिये तुम्हारे दीन की इ़मारत मुस्तह़कम (मज़बूत) होने वाली है और इसी रास्ते को इख़्तियार करके तुम जन्नतुल फ़िरदौस के ह़क़दार बनने वाले हो।

लेकिन नमाज़ जो अल्लाह और रसूल की रज़ा ह़ासिल करने का ज़रिया, ईमान की बक़ा (ह़िफ़ाज़त) और जन्नत में दाख़िला का सबब है उससे मोमिनीन को दूर रखने का बेड़ा शैतान मरदूद ने रोज़े अव्वल से उठा रखा है कि जब मैं सजदा न करके जन्नत से निकाला गया तो औलादे आदम सजदारेज़ होकर जन्नत का ह़क़दार कैसे बन सकती है! इसलिये शैतान मरदूद ने अपनी ज़ुर्रिय्यत (औलाद) को सख़्ती के साथ हुक्म दे रखा है कि वो अह्ले ईमान को नमाज़ से रोके। नमाज़ से रोकने के लिये लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों में उलझाए और ज़रूरियात में फँसा दे। इस तरह़ बन्दा ख़ुद ही दरगाहे इलाही का दुत्कारा हुआ हो जाएगा। हैफ़ (अफ़सोस) सद हैफ़ (सैकड़ो अफ़सोस) आज मुसलमान पूरी तरह़ शैतान की साज़िश का शिकार हो चुके हैं। नमाज़ की अहमियत उसकी क़द्रो मन्ज़िलत पूरे तौर पर ज़ह्नो फ़िक्र से रुख़सत हो चुकी है बल्कि उसे बोझ और बेकार लोगों का मश्ग़ला (काम) समझा जाने लगा है।

इन्हीं ह़ालात को पेशे नज़र रखकर ये किताबचा तरतीब दिया गया है। इस किताबचे में क़ुरआनो ह़दीस़ और वाक़ियात की रोशनी में नमाज़ की अहमियत, उसकी फ़ज़ीलत और नमाज़ छोड़ने पर जो वई़दें आई हैं उनका ज़िक्र किया गया है। अब फ़ैसला अह्ले ईमान के हाथों है कि वो ख़ालिक़े आ़लम (अल्लाह) के हुक्म पर सजदारेज़ होकर जन्नतुल फ़िरदौस के ह़क़दार बनना चाहते हैं या शैतान लई़न की पैरवी करते हुए नमाज़ और सजदा से मुँह मोड़कर जहन्नम में दाख़िल होना चाहते हैं।

मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी
रूक्नः ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

नमाज़

मज़हबे इस्लाम में नमाज़ को जो अहमियत हासिल है वो किसी से मख़फ़ी (छुपी) नहीं। हुज़ूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नमाज़ को दीन का सुतून, ईमान की अलामत, जन्नत की कुन्जी, मोमिनों की मेराज, अपनी आँखों की ठण्डक और ख़ुदावन्दे कुद्दूस की कुरबत का ज़रिया बताया है। इसके बर अक्स (उल्टे) बे–नमाज़ियों को अज़ाब की वईदें (फटकारें) सुनाई गईं और नमाज़ छोड़ने को दुनिया व आख़िरत में नाकामी का ज़रिया बताया है।

नीचे कुरआनो हदीस़ की रोशनी में नमाज़ की अहमियत, उसकी फ़ज़ीलत और नमाज़ छोड़ने पर जो नुक़सानात हैं तहरीर किये जा रहे हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों को इन आयतों और हदीसों से सबक़ हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

नमाज़ की अहमियत और कुरआनी आयात

नमाज़ की अहमियत समझने के लिये ये जानना काफ़ी है कि अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में जितनी ताकीद नमाज़ की फ़रमाई है उतनी ताकीद किसी और बात की नहीं फ़रमाई। अल्लाह तआला का बार बार नमाज़ की ताकीद फ़रमाना ही उसकी अहमियत को ज़ाहिर कर रहा है। चुनान्चे मोमिनों की सिफ़ात (ख़ूबियों) का ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमा रहा है:

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ[1]

तर्जमाः मुसलमान वो हैं जो ईमान रखते हैं ग़ैब की बातों पर और नमाज़ क़ाएम करते हैं और अल्लाह की दी हुई रोज़ी में से उसकी राह में ख़र्च करते हैं।

एक जगह नमाज़ छोड़ने की बुराई का ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला फ़रमा रहा हैः

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ[2]

तर्जमाः नमाज़ क़ाएम करो और मुशरिकों जैसे न बनो।

अल्लाह तआला ने नमाज़ को ईमान की अ़लामत (निशानी) बताया और नमाज़ न पढ़ने को मुशरिकों की पहचान बताया है इससे बढ़कर नमाज़ की अहमियत समझने के लिये और क्या बात हो सकती है।

नमाज़ की फ़ज़ीलत और कुरआनी आयात

नमाज़ की बेपनाह फ़ज़ीलतें हैं जिनसे हर नमाज़ी फ़ैज़याब हो सकता है उन फ़ज़ीलतों और फ़ाइदों में से एक ये भी है कि नमाज़ शिकस्ता (टूटे) दिल लोगों के मर्ज़ का इलाज है। चुनान्चे फ़रमाया गयाः

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ[3]

तर्जमाः जान लो! अल्लाह के ज़िक्र ही में दिलों का सुकून है।

---

[1] सूर–ए–बक़रा, पाराः 1, आयतः 3
[2] सूर–ए–रूम, पाराः 21 आयत 31
[3] सर–ए–रअ़द, पाराः 13, आयतः 28

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ को हर तरह़ की बुराई व बे–ह़याई से बचने का ज़रिया बताया है। चुनान्चे इरशादे पाक है:

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ[4]

तर्जमा: बेशक नमाज़ बे–ह़याई और बुराई से रोकती है।

ह़दीसों में आता है कि एक सह़ाबी से कोई गुनाह सरज़द हो गया, उन्होंने नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर माफ़ी के लिये दरख़्वास्त पेश की। इस पर ये आयत नाज़िल हुई:

أَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ[5]

तर्जमा: नमाज़ क़ाएम करो दिन के दोनों किनारे और कुछ रात गए बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं। ये नसीह़त है नसीह़त मानने वालों के लिये।

पता चला कि नमाज़ की बरकतों से लोगों के गुनाह मिट जाते हैं।

नमाज़ छोड़ने का अन्जाम कुरआने करीम की रोशनी में

कुरआने करीम में जहाँ नमाज़ की फ़ज़ीलतें बयान हुई हैं वहीं नमाज़ छोड़ने पर सख़्त वईदें भी सुनाई गई हैं। चुनान्चे अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: जब जन्नती

[4] सूर–ए–अन्कबूत, पारा: 21, आयत: 45
[5] सूर–ए–हूद, पारा: 12, आयत 114

जहन्नमियों से पूछेंगे कि तुम्हें कौन सा काम जहन्नम ले गया? इस पर वो कहेंगे:

لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ[6]

तर्जमाः हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

इस आयत से हर बे–नमाज़ी को सबक़ लेना चाहिये कि कहीं वो भी नमाज़ न पढ़ने की वजह से जहन्नम का ह़क़दार तो नहीं बन रहा है?

ह़ज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं: नमाज़ छोड़ना कुफ़्र है। (मुकाशफ़तुल कुलूब)

इस ह़दीस़ का अगरचे उ़लमा व मुह़द्दिस़ीन ने ये मतलब बयान फ़रमाया है कि कुफ़्र से मुराद कुफ़्र के क़रीब पहुँच जाना है। इस मक़ाम पर ख़ाकसार अ़र्ज़ करता है कि ये क्या कम गुनाह है कि मोमिन होने के बावुजूद आदमी ऐसा काम करे जिसकी वजह से कुफ़्र के क़रीब पहुँच जाए। (इससे अल्लाह तआ़ला की पनाह!)

एक जगह अल्लाह तआ़ला बे–नमाज़ियों की मज़म्मत (बुराई बयान) करते हुए फ़रमा रहा है:

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ

فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ[7]

तर्जमाः तो उनके बाद (यानी अच्छे लोगों के बाद) उनके बुरे लोग जा–नशीन हुए कि नमाज़ को ज़ाएअ़ (बरबाद)

---

[6] सूर–ए–मुद्दस़्स़िर, पाराः 29, आयत 43
[7] सूर–ए–मरयम, पाराः 16, आयतः 59

कर दिया और ख़्वाहिशात के पीछे पड़े तो अ़नक़रीब वो जहन्नम की वादी "ग़ै" (जो बहुत ही ख़तरनाक है) में दाख़िल किये जाएँगे मगर जिन्होंने तौबा कर ली वो बच जाएँगे।

इस आयत में बे–नमाज़ियों को हौलनाक सज़ा की ख़बर दी गई है कि उन्हें जहन्नम की वादी "ग़ै" में दाख़िल किया जाएगा। उ़लमा फ़रमाते हैं कि "ग़ै" अ़ज़ाबे इलाही की एक ऐसी वादी है कि उसके ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब से सारा जहन्नम पनाह माँगता है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नमाज़ के ज़ाएअ़ (बरबाद) करने के मअ़ना (मतलब) ये नहीं है कि बिल्कुल नमाज़ नहीं पढ़ते बल्कि इसका मअ़ना ये है उसे वक़्त से बे–वक़्त करके पढ़ते हैं (यानी क़ज़ा करके पढ़ते हैं)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला नमाज़ में सुस्ती करने वालों को अ़ज़ाब की वईद सुनाते हुए यूँ फ़रमा रहा है:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ[8]

तर्जमा: "वैल" है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिये जो अपनी नमाज़ों में सुस्ती करते हैं।"

"वैल" अस्ल में जहन्नम की उस वादी का नाम है कि अगर उसमें दुनिया के पहाड़ डाले जाएँ तो वो भी उसकी शदीद (सख़्त) गर्मी से पिघल जाएँ। ये उन लोगों का ठिकाना है जो नमाज़ में सुस्ती करते हैं और उसको सही वक़्त से टालकर (क़ज़ा करके) पढ़ते हैं।

[8] सूर–ए–माऊ़न, पारा: 30, आयत: 4, 5

जब नमाज़ में सुस्ती करने वाले को इतना सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा तो आप ख़ुद अन्दाज़ा लगा लीजिये कि सिरे से नमाज़ न पढ़ने वालों को कितने सख़्त अ़ज़ाब से दो चार होना पड़ेगा?

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला अपने ज़िक्र से ग़फ़लत बरतने वालों को झिंझोड़ते हुए यूँ फ़रमा रहा है:

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑨ [9]

तर्जमा: ऐ ईमान वालो! तुम्हें तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दे और जिसे (उसके माल और उसकी औलाद ने अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया) तो वही लोग घाटा उठाएँगे।

मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि यहाँ ज़िक्र से मुराद नमाज़ है। इस तौजीह (बात) को पेशे नज़र रखें और मुआ़शरे (समाज) का मुहासबा (जाँच) करें तो जो तल्ख़ (कड़वी) ह़क़ीक़त हमारे सामने उभरकर आती है वो ये है कि इस दौर में ज़्यादातर लोग जो नमाज़ से दूर हैं उनकी नमाज़ से दूरी का सबब या तो मालो दौलत जमा करने की धुन है या फिर इसकी वजह ये है कि वो औलाद की देख रेख और दीगर ज़रूरियात की फ़िक्र में गिरफ़्तार हैं। जबकि अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह़ (खुले) लफ़्ज़ों में फ़रमा दिया है कि जो लोग माल की मुह़ब्बत या औलाद की फ़िक्र में नमाज़ छोड़ेंगे فَأُولَٰئِكَ هُمُ

---

[9] सूर–ए–मुनाफ़िक़ून, पाराः 28, आयतः 9

اَلْخٰسِرُوْنَ۝ तो वही ख़सारे में रहेंगे। और शायद नमाज़ छोड़ने की एक बड़ी वजह ये भी हो सकती है कि लोगों के दिलों में अब आख़िरत की बरबादी और अज़ाबे इलाही की फ़िक्र बाक़ी नहीं है। जब कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ[10]

तर्जमा: और आख़िरत का अज़ाब निहायत ही सख़्त और अज़ीयतनाक (तकलीफ़देह) है। काश! लोग इसे समझ लेते।

नमाज़ की अहमियत अहादीस़ की रोशनी में

1– हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है:

(i) अल्लाह की वह़दानियत (उसके एक होने) की गवाही देना। इस बात का इक़रार करना कि ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

(ii) नमाज़ अदा करना।

(iii) ज़कात देना।

(iv) (कर सकता हो तो) ह़ज करना।

(v) रमज़ान के रोज़े रखना।[11]

इस ह़दीस़े पाक में पाँच चीज़ों को इस्लाम की बुनियाद बताया गया है जिसमें नमाज़ भी शामिल है। अब ज़ाहिर है कि जो नमाज़ छोड़ देता है वो इस्लाम की बुनियाद ही ढा देता है।

---

[10] सूर–ए–ज़ुमर, पारा: 23, आयत: 26
[11] सहीह़ बुख़ारी, ह़दीस़: 7

2– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः नमाज़ दीन का सुतून (खम्बा) है जिसने उसे क़ाएम रखा समझो उसने अपने दीन को क़ाएम रखा और जिसने नमाज़ छोड़ दी समझो उसने दीन की इमारत ढा दी। (कन्ज़ुल उ़म्माल)

3– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः हर चीज़ की कोई ख़ास अ़लामत (निशानी) होती है और ईमान की अ़लामत नमाज़ है। (मुन्यतुल मुसल्ली)

नमाज़ मुसलमान होने की अ़लामत (निशानी) है यानी जो नमाज़ी नहीं समझो वो ईमान की निशानी से ख़ाली है।

4– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः बन्दे और कुफ़्र व शिर्क के दरमियान (यानी मुसलमान और काफ़िर के दरमियान फ़र्क़ करने वाली चीज़) नमाज़ का छोड़ना है।[12]

5– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः सबसे पहले क़ियामत के दिन आदमी से उसके आमाल के सिलसिले में नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा अगर ये दुरूस्त हुई तो ये कामयाबी और नजात पाएगा और अगर नमाज़ पूरी न हुई तो ये घाटा और नुक़सान उठाएगा।[13]

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि नमाज़ की जहाँ तक हो सके पाबन्दी करें ताकि क़ियामत के दिन ज़िल्लत और रूसवाई का सामना न करना पड़े।

---

[12] सहीह मुस्लिम, ह़दीस़ 257

[13] तिर्मिज़ी शरीफ़, ह़दीस़: 413

6– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला ने तौह़ीद और नमाज़ से बढ़कर अपनी मख़लूक़ पर कोई चीज़ फ़र्ज़ नहीं की अगर नमाज़ से ज़्यादा महबूब अल्लाह तआ़ला के नज़दीक कोई चीज़ होती तो फ़िरिश्तों के लिये उसी को मुक़र्रर फ़रमा देता ह़ालाँकि इन फ़िरिश्तों में से कोई रूकू में है, कोई सदे में है।[14]

7– ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं: आदमी अल्लाह तआ़ला के सबसे ज़्यादा क़रीब उस वक़्त होता है जब वो सजदे में होता है।[15]

ज़ाहिर है कि सजदा नमाज़ का ह़िस्सा है तो जो शख़्स जितनी नमाज़ें पढ़ेगा उसके सजदे उतने ज़्यादा होंगे और जब सजदे ज़ाएद (ज़्यादा) होंगे तो अल्लाह तआ़ला की बारगाह में उसकी क़द्र भी ज़्यादा होगी। (सुब्ह़ान अल्लाह!)

8– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम्हारे बच्चे सात बरस के हों तो उन्हें नमाज़ का हुक्म दो और जब वो दस बरस के हो जाएँ और नमाज़ न पढ़ें तो उन्हें मारकर नमाज़ पढ़ाओ।[16]

हुज़ूर के इरशाद में ह़िकमत ये है कि सात बरस की उ़म्र होने पर बच्चों में शुऊ़र बेदार होने लगता है यानी शुऊ़र बेदार होते ही बच्चों को इबादत की जानिब तवज्जो दिलाई जाए फिर भी दस बरस की उ़म्र तक अगर नमाज़ के आ़दी न बन सकें तो उन्हें मारने का हुक्म इसलिये दिया गया क्योंकि

---

[14] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीस: 19038
[15] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस: 1111
[16] अबू दाऊद, ह़दीस: 495

इस उम्र में जो चीज़ अपनाई जाती है वो फ़ितरत में बैठ जाती है यानी नमाज़ को बच्चों की फ़ितरत में शामिल कर दिया जाए।

9– ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी, वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः उस आदमी का कोई ईमान नहीं जो अमानतदार न हो और उस आदमी की नमाज़ नहीं जिसकी तहारत दुरूस्त न हो और उस आदमी का कोई दीन नहीं जिसकी ज़िन्दगी में नमाज़ न हो। बेशक नमाज़ को दीन में वही मक़ाम ह़ासिल है जो इन्सानी जिस्म में सर को ह़ासिल है।[17]

10– ख़लीफ़–ए–दोम ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने सूबों (राज्यों) के गवर्नरों के पास पैग़ाम भेजा कि तुम्हारे सब कामों में मेरे नज़दीक अहम काम नमाज़ है जिसने उसकी हिफ़ाज़त की और उसको अदा करता रहा उसने अपना दीन मह़फ़ूज़ रखा और जिसने नमाज़ ज़ाएअ़ (बरबाद) की वो और कामों को और भी ज़ाएअ़ करेगा। (सह़ीह़ बुख़ारी)

यानी नमाज़ जिसे दीन के सुतून (खम्भे) का दर्जा दिया गया है और जिसे ईमान की निशानी व पहचान बताया गया है ये जानने के बावुजूद अगर कोई नमाज़ छोड़ दे तो ऐसे आदमी का क्या एतिबार कि वो और कौन कौन सी चीज़ों में ग़फ़लत और सुस्ती इख़्तियार करेगा?

---

[17] अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हिस्साः 1, ह़दीसः 541

नमाज़ की फ़ज़ीलत अहादीस़ की रोशनी में

(1) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा से दरयाफ़्त फ़रमायाः तुम ऐसे आदमी के बारे में क्या कहते हो जिसके घर के दरवाज़े पर एक नहर हो और वो हर दिन उस नहर में पाँच मर्तबा गुस्ल करता हो क्या उस आदमी के बदन में किसी तरह़ की गन्दगी बाक़ी रहेगी? सह़ाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ऐसे आदमी के जिस्म पर किसी तरह़ की गन्दगी बाक़ी नहीं रहेगी। इस पर हुज़ूर ने फ़रमायाः यही मिस़ाल पंजवक़्ता नमाजों की है, अल्लाह तआ़ला इसके ज़रिये बन्दों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता है।[18]

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक मर्तबा मौसमे सर्मा (सर्दी के मौसम) में मदीने से बाहर तशरीफ़ ले गए, पतझड़ का मौसम था, दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे, आपने एक दरख़्त की दो टहनियों को पकड़ा, (उन्हें हिलाया) पत्ते झड़ने लगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐ अबू ज़र! अबू ज़र ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मैं ह़ाज़िर हूँ। आपने फ़रमायाः देखो! जब कोई मुसलमान नमाज़ पढ़ता है और उसके ज़रिये अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहता है तो उसके गुनाह उसी तरह़ झड़ जाते हैं जिस तरह़ इस दरख़्त के पत्ते झड़ रहे हैं।[19]

(3) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र कहते हैं कि एक रोज़ नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ का

---

[18] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़ः 1554

[19] मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस़ः 21596

ज़िक्र किया और फ़रमायाः जिसने नमाज़ की पाबन्दी की तो नमाज़ उसके लिये क़ियामत के दिन रोशनी, हुज्जत और नजात का सबब बनेगी।[20]

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि मैंने महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह तआला को बन्दे का कौन सा अमल सबसे ज़्यादा पसन्द है? फ़रमायाः वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।[21]

(5) हज़रत मुआज़ कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! वो बात बताइये जो मुझे जन्नत में ले जाए और जहन्नम से बचाए? फ़रमायाः अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ाएम करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज़ करो।[22]

मालूम हुआ कि जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से नजात के लिये नमाज़ की अदायगी ज़रूरी है।

(6) हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमायाः जो शख़्स अपने घर में तहारत (यानी वुज़ू) करके फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के लिये मस्जिद जाता है तो एक क़दम पर एक गुनाह मिटता है और दूसरे पर एक दर्जा बुलन्द होता है। (मुस्लिम शरीफ़)

[20] मुस्नदे अहमद बिन हम्बल, हदीसः 6576
[21] सहीह बुख़ारी, हदीसः 496
[22] सहीह मुस्लिम, हदीसः 116

(7) हज़रत उबादा बिन सामित से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: पाँच वक़्त की नमाज़ अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ फ़रमाई है, जिसने अच्छे ढँग से वुज़ू किया और नमाजों को उनके वक़्तों पर अदा किया और उनका हक़ हल्का समझकर बरबाद नहीं किया तो अल्लाह तआला फ़रमाता है: उनका मेरे ज़िम्मे ये वादा है कि ऐसे आदमी को बख़्श दूँगा।[23]

(8) हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: नमाज़ दरमियानी औक़ात (वक़्तों) के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जबकि कबीरा (बड़े) गुनाहों से परहेज़ किया जाए।[24]

(9) हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: बन्दा जब सजदे की आयत पढ़कर सजदा करता है तो शैतान अलाहिदा (अलग) होकर रोता है और कहता है: हाय मुसीबत! इसे सजदे का हुक्म हुआ, इसने सजदा किया तो इसे जन्नत नसीब हुई और मुझे सजदे का हुक्म हुआ और मैंने नहीं किया तो मुझे दोज़ख़ मिली।[25]

शैतान को जन्नत से इसलिये निकलना पड़ा क्योंकि अल्लाह के हुक्म के बावुजूद उसने सजदा करने से इन्कार कर दिया था। हमें भी अल्लाह तआला ने नमाज़ पढ़ने यानी सजदारेज़ होने का हुक्म फ़रमाया है। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम भी इसी सजदे से ग़ाफ़िल होने की वजह से जन्नत से महरूम कर दिये जाएँ!

---

[23] मुस्नदे अहमद, हदीस: 18157
[24] कन्जुल उम्माल, हदीस 23299
[25] सहीह मुस्लिम, हदीस: 254

(10) हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अपने अह्ले ख़ाना (घर वालों) को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हें ऐसी जगह से रोज़ी देगा जिसके मुतअ़ल्लिक़ तुम गुमान भी नहीं कर सकते। (इह़याउल उ़लूम)

मालूम हुआ कि नमाज़ पढ़ने वालों को अल्लाह तआ़ला बेरोज़गार नहीं रहने देता, उन्हें ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता।

(11) हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।[26]

जब नमाज़ जन्नत की चाभी है तो उसके बग़ैर जन्नत का दरवाज़ा हरगिज़ नहीं खुल सकता।

(12) रह़मते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः बन्दा जब नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो उसके लिये जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, उसके और परवरदिगार के दरमियान से ह़िजाबात (पर्दे) हटा दिये जाते हैं और हूरे ईन उसका इस्तिक़बाल करती हैं।[27]

यानी बन्दा नमाज़ के वक़्त अल्लाह की रह़मत के बेह़द क़रीब हो जाता है।

(13) हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने वुज़ू किया जैसा कि हुक्म है और नमाज़ पढ़ी जैसा कि हुक्म है तो जो पहले किया है (यानी छोटा गुनाह) वो माफ़ हो गया।[28]

---

[26] मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस़ः 14703

[27] अत्तरग़ीब वत्तरहीब, ह़िस्साः 1, ह़दीस़ः 440

[28] नसई शरीफ़, ह़दीस़ः 144

(14) हज़रत हन्ज़ला कातिब रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, कहते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये फ़रमाते हुए सुनाः जो पंजवक़्ता नमाज़ों को सही रूकू, सजदा और वक़्त की पाबन्दी के लिहाज़ से अदा करे और जान ले कि ये अल्लाह की तरफ़ से हक़ है तो वो जन्नज में दाख़िल होगा। या रावी ने कहाः उसके लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी या जहन्नत उस पर हराम कर दी जाएगी।[29]

नमाज़ छोड़ने का वबाल अहादीस़ की रोशनी में

(1) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः तुम हरगिज़ फ़र्ज़ नमाज़ को जान बूझकर न छोड़ना इसलिये कि जो जान बूझकर फ़र्ज़ नमाज़ों को छोड़ देता है वो अल्लाह के ज़िम्म–ए–करम से बाहर हो जाता है।[30]

अब ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला जिस शख़्स को अपनी ज़िम्मेदारी से बाहर निकाल दे वो कैसे कामयाब हो सकता है?

(2) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः वो अहद (वादा) जो हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान हाएल है वो नमाज़ है। जिसने नमाज़ छोड़ दी समझो उसने काफ़िरों जैसा काम किया।[31]

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ फ़रमाते हैंः रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा आमाल में से

---

[29] मुस्नदे अहमद, हदीसः 18842
[30] मुस्नदे अहमद बिन हम्बल, हदीसः 27404
[31] सुनने तिर्मिज़ी, हदीसः 2621

किसी अ़मल के छोड़ देने को कुफ़्र नहीं शुमार करते थे सिवाए नमाज़ के। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

यानी सह़ाबा किराम नमाज़ न पढ़ने को कुफ़्र शुमार करते थे। (अल्लाह की पनाह!)

(4) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जिसने नमाज़ की हि़फ़ाज़त नहीं की तो न क़ियामत के दिन उसके लिये रोशनी होगी और न ही हुज्जत बल्कि वो क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़ल्फ़ (जैसे दुश्मनाने ख़ुदा) के साथ होगा।[32]

इन सारे बदबख़्तों का ठिकाना जहन्नम है और बे–नमाज़ी का इनके साथ होने का मतलब ये है कि वो भी जहन्नम में इनके साथ अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा।

(5) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो जान बूझकर नमाज़ छोड़ देता है उसका नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिससे उसे दाख़िल होना है।[33]

यानी बे–नमाज़ी का जहन्नम में दाख़िला ऐसा यक़ीनी मामला है कि जहन्नम के दरवाज़े में उसका नाम लिख दिया जाता है।

(7) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने नमाज़ छोड़ दी उसका कोई दीन नहीं, नमाज़ दीन का सुतून है।[34]

---

[32] मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीसः 6576
[33] कन्जुल उ़म्माल, ह़दीसः 19090
[34] कन्जुल उ़म्माल, ह़दीसः 21618

यानी ऐसे शख़्स के ईमान का कोई भरोसा नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो।

(8) और ये भी फ़रमाया कि इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं जिसके लिये नमाज़ न हो।[35]

(9) एक दिन हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रदियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमायाः यूँ दुआ़ माँगा करोः "ऐ अल्लाह! हममें से किसी को शक़ी (बदकिस्मत) और महरूम न बनाना" फिर फ़रमायाः जानते हो शक़ी और महरूम कौन होता है? सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः आप ही बताएँ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! तो आपने फ़रमायाः जो तारिके नमाज़ (यानी नमाज़ छोड़ने वाला) होता है (वही शक़ी और महरूम होता है)

(10) मेराज की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जिनके सर पत्थर से कुचले जा रहे थे, जब वो रेज़ा रेज़ा (चूर चूर) हो जाते फिर अपनी असली हालत पर आ जाते और यही अ़ज़ाब उन्हें बराबर दिया जा रहा था। आपने पूछाः जिबराईल! ये कौन लोग हैं? जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने कहाः ये वो लोग हैं जिनके सर नमाज़ पढ़ने से भारी हो जाते थे[36] (यानी ये नमाज़ नहीं पढ़ते थे, या नमाज़ को बोझ समझते थे)

कुरआन और हदीस़ के इन वाज़ेह (खुले) इरशादात से वाक़िफ़ होने के बाद हर उस शख़्स को जो नमाज़ से ग़फ़लत बरत रहा हो उसे चाहिये कि नमाज़ी बन जाए ताकि अल्लाह

[35] मुस्नदे बज़्ज़ार, हदीस़: 8529
[36] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 386

और रसूल की रज़ा ह़ासिल हो और हर तरह़ की आफ़त और मुसीबत से दुनिया और आख़िरत में ह़िफ़ाज़त हो।

नमाज़ की बरकतें वाक़ियात की रोशनी में

ह़ज़रत इमाम ग़ज़ाली अ़लैहिर्रह़मा मुकाशफ़तुल क़ुलूब में तह़रीर फ़रमाते हैं: बाज़ ओ़लमा का कहना है और ह़दीस़ शरीफ़ में भी है कि जो नमाज़ की पाबन्दी करता है अल्लाह तआ़ला उसे पाँच चीज़ों से सरफ़राज़ फ़रमाता है:

(i) उससे तंगदस्ती ख़त्म कर दी जाती है।

(ii) उसे अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होगा।

(iii) नाम–ए–आ़माल उसके दाएँ हाथ में दिया जाएगा

(iv) पुलसिरात से वो बिजली की तरह़ गुज़रेगा।

(v) जन्नत में बिला ह़िसाब दाख़िल होगा।[37]

नमाज़ की बरकतों के सिलसिले में ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान सफ़ूरी अ़लैहिर्रह़मा नुज़हतुल मजालिस में तह़रीर फ़रमाते हैं: नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तवील क़ियाम (यानी नमाज़ में देर तक खड़ा रहना) क़ियामत में अमान का ज़ामिन (ज़मानतदार) है।[38]

ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: तवील क़ियाम पुलसिरात पर अमान का बाइ़स़ है और तवील (लम्बा) सजदा अ़ज़ाबे क़ब्र से बचने का ज़रिया है। बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया: सकरात मौत में आसानी का सबब है। आपने मज़ीद (और) फ़रमाया: तवील सजदा अल्लाह तआ़ला की मह़बूबियत का

---

[37] मुकाशफ़तुल क़ुलूब, पेज: 392

[38] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्सा: 1, पेज: 510

वसीला है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया: लम्बा सजदा जन्नत में हमेशगी का सबब है।[39]

गुनाहों से पाक होने का ज़रिया

एक मर्तबा ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम समन्दर के किनारे से गुज़रे तो उन्होंने एक निहायत ही ख़ूबसूरत परिन्दा देखा जो देखते ही देखते कीचड़ में दाख़िल हो गया फिर कीचड़ से लतपत होकर उसने समन्दर में गुस्ल किया तो वो पहले की तरह़ ख़ूबसूरत नज़र आने लगा। इस तरह़ उसने ये अ़मल (काम) पाँच मर्तबा किया। आप ये देखकर ह़ैरत में थे कि या अल्लाह! ये क्या मामला है? उसी वक़्त ह़ज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ किया: ये उम्मते मुह़म्मदीया की पाँच नमाज़ों की मिसा़ल है। कीचड़ गुनाह है और समन्दर में गुस्ल करना नमाज़ के मानिन्द है यानी जब वो नमाज़ पढ़ेंगे तो उनके गुनाह धुल जाएँगे।[40]

पंजगाना नमाज़ों की बरकत

पंजगाना नमाज़ों के औक़ात (वक़्त) मुक़र्रर करने का सबब ये है:

ज़ुहर के वक़्त जहन्नम भड़काई जाती है तो जिसने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी वो गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसे अभी ही पैदा हुआ है।

अ़स्र के वक़्त ह़ज़रत सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम ने ममनूअ़ा दरख़्त से कुछ खा लिया था (यानी उस दरख़्त से

[39] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्सा: 1, पेज: 510
[40] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्सा: 1, पेज: 489

जिससे आपको खाने से मना किया गया था) तो जो अ़स्र की नमाज़ अदा करेगा उसे दोज़ख़ से रिहाई ह़ासिल होगी।

मग़रिब के वक़्त अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की तौबा कुबूल फ़रमाई थी तो जो मग़रिब की नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआ़ला से सवाल करेगा उसे पूरा किया जाएगा।

इ़शा और फ़ज्र का वक़्त क़ब्र और क़ियामत की तारीकी से मुशाबहत (मेल) रखता है। तो जो इ़शा की नमाज़ पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उसे क़ब्र और क़ियामत में अनवारो तजल्लियात से नवाज़ेगा और जिसने फ़ज्र अदा की अल्लाह तआ़ला उसे दोज़ख़ और निफ़ाक़ से महफ़ूज़ रखेगा।[41] (आमीन)

नमाज़ी के लिये फ़िरिश्ता दुआ़ करता है

इब्ने अ़ता रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि बयान करते हैं: जब मुसलमान नमाज़ अदा करता है और उसकी नमाज़ कुबूल कर ली जाती है तो अल्लाह तआ़ला उस नमाज़ी की शक्ल का एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमा देता है जो क़ियामत तक रूकू और सुजूद (यानी सजदों) में लगा रहेगा और उन तमाम आमाल का स़वाब नमाज़ी के नाम–ए–आ़माल में लिखा जाएगा।[42]

---

[41] नुज़हतुल मजालिस, हिस्साः 1, पेजः 489
[42] नुज़हतुल मजालिस, हिस्साः 1, पेजः 488

जब एक सजदे की ये बरकत है तो...

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सबसे पहले इसराफ़ील अलैहिस्सलाम ने सजदा किया था। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ये इ़ज़्ज़त बख़्शी कि उनकी पेशानी पर मुकम्मल कुरआने करीम लिख दिया। इ़बरत की जगह ये है कि जब उन्हें एक सजदा करने पर इतना बड़ा इनाम मिला तो जो अल्लाह तआ़ला को सारी ज़िन्दगी सजदा करता रहेगा उसे कितना बड़ा इनाम मिलेगा? क्या कोई अन्दाज़ा लगा सकता है? ह़क़ीक़त ये है कि ऐसे आदमी के दिल पर ईमान और मअ़रिफ़त लिख दी जाती है।[43]

كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ[44]

तर्जमा: उनके दिलों में ईमान नक़्श कर दिया जाता है।

नमाज़ और पुलसिरात

क़यामत के दिन पुलसिरात पर कुछ लोग परेशानी के आ़लम में खड़े होंगे, जिबराईल अमीन तशरीफ़ लाकर पूछेंगे: तुम क्यों परेशान हो? वो कहेंगे: पुलसिरात कैसे पार करें? कहा जाएगा: तुम समन्दर कैसे पार किया करते थे? लोग कहेंगे: जहाज़ के ज़रिये से पार करते थे। फिर लोगों के लिये जो दुनिया में नमाज़ पढ़ते होंगें जहाज़ की शक्ल में उनकी नमाज़ आएगी जिस पर नमाज़ी सवार होकर पुलसिरात से ऐसे गुज़रेंगे जैसे जहाज़ से गुज़रते हैं।[45]

---

[43] नुज़हतुल मजालिस, हिस्सा: 1, पेज: 494

[44] सूर–ए–मुजादला, पारा: 28, आयत: 22

[45] नुज़हतुल मजालिस, हिस्सा: 1, पेज: 494

इबलीस की नाकामी

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की एक मर्तबा इबलीस से मुलाक़ात हुई, आपने इबलीस से कहाः तुझे अल्लाह की क़सम! ये बता कि वो कौन सा अ़मल है जो तेरी पुश्त (पीठ) तोड़ डालता है? (यानी तुझे नाकाम बना देता है) ये सुनते ही वो गिर पड़ा और कहने लगाः फ़राइज़ (यानी फ़र्ज़ नमाज़ों) के अ़लावा घर में नमाज़ पढ़ना।[46]

मालूम हुआ कि नमाज़ की पाबन्दी और ख़ूब नमाज़ की अदायगी इबलीस की नाकामी का सबब है लेकिन बदक़िस्मती से मुसलमान नमाज़ न पढ़कर ख़ुद को नाकाम बना रहा है।

अगर जन्नत चाहते हो तो?

एक सहाबी ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएँ कि मैं भी उन्हीं लोगों में शामिल रहूँ जिनकी क़ियामत के दिन आप शफ़ाअ़त फ़रमाएँगे और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मुझे जन्नत में आपकी रफ़ाक़त (साथ) चाहिये। आपने फ़रमायाः इस सिलसिले में सजदों की कस़रत से मेरी मदद करो[47] (यानी ज़्यादा से ज़्यादा सजदे करो ताकि इस मन्सब के अह्ल (लाएक़) हो जाओ)

सही नमाज़ और सही तहारत जन्नत पहुँचाएगी

हज़रत इमाम ग़ज़ाली मुकाशफ़तुल क़ुलूब में तह़रीर फ़रमाते हैंः नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

[46] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्साः 1, पेजः 518
[47] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्साः 1, पेजः 497

इरशाद फ़रमायाः मेरे पास अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम लेकर जिबरईल अमीन आए और कहाः ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः मैंने आपकी उम्मत पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जो शख़्स उन्हें सही वुज़ू से, सही वक़्त में, सही रूकू और सजदा से अदा करेगा, मेरा उन नमाज़ों के सबब उससे ये वादा है कि मैं उसे ज़न्नत में दाख़िल करूँगा।[48]

नमाज़ और इ़बादात को छोड़कर कोई अ़ज़ाब से बच नहीं सकता

अल्लाह तआला ने इस्लाम में चार चीज़ें फ़र्ज़ की हैं जो शख़्स उनमें से तीन को पूरा करता है मगर एक को छोड़ देता है उसे अ़ज़ाब से कोई चीज़ नहीं बचाएगी यहाँ तक कि वो चारों पर अ़मल करेः नमाज़, ज़कात, रोज़ा और ह़ज।[49]

नमाज़ शैतान का मुँह काला करती है

बैहक़ी की ह़दीस़ है कि नमाज़ तराज़ू है जिसने उसे पूरा किया वो कामयाब है। देलमी की ह़दीस़ है कि नमाज़ शैतान का मुँह काला करती है, सदक़ा उसकी कमर तोड़ता है, अल्लाह के लिये लोगों से मुह़ब्बत और इ़ल्म से दोस्ती उसे हराती है। जब तुम ये आमाल करते हो तो शैतान तुमसे इतना दर हो जाता है कि जैसे सूरज निकलने की जगह डूबने की जगह से दूर है।[50]

[48] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 390
[49] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 380
[50] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 390

नमाज़ के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वसीयत

हज़रत उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीयत फ़रमाईः

1– किसी को अल्लाह तआला के साथ शरीक न ठहराओ चाहे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या जला दिया जाए फाँसी पर लटका दिया जाए।

2– जान बूझकर नमाज़ न छोड़ो क्योंकि जिसने जान बूझकर नमाज़ छोड़ दी वो दीन से निकल गया।

3– गुनाह और ना–फ़रमानी न करो ये अल्लाह तआला के क़हर की वजह हैं।

4– शराब न पियो क्योंकि ये गुनाहों का ढेर है।[51]

हज़रत उमैमा रदियल्ललाहु अन्हा से मरवी है कि मैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुस्ल फ़रमा रहे थे और मैं आपके सर पर पानी डाल रही थी, एक शख़्स ने आकर कहाः मुझे वीसत फ़रमाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

1– अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहरा चाहे तुझे काट दिया जाए या जला दिया जाए।

2– वालिदैन की ना–फ़रमानी न कर चाहे वो तुझे घर और माल व दौलत छोड़ने को कहें तो सब कुछ छोड़ दे।

3– शराब कभी न पी क्योंकि ये हर बुराई की कुंजी है

---

[51] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 378

4— फ़र्ज़ नमाज़ कभी भी जान बूझकर न छोड़ क्योंकि जिसने ऐसा किया वो अल्लाह और उसके रसूल के ज़िम्मे से निकल गया।[52]

नमाज़ छोड़ने के नुक़सानात ह़क़ीक़त की रोशनी में

ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान सफ़ूरी अ़लैहिर्रह़मा नुज़हतुल मजालिस में पंजगाना नमाज़ें छोड़ने वाले के सिलसिले में तह़रीर फ़रमाते हैंः फ़िरिश्ते नमाज़े फ़र्ज़ छोड़ने वाले को फ़ाजिर (बद चलन) और बदकार कहते हैं, ज़ुहर की नमाज़ छोड़ने वाले को ख़ासिर (नुक़सान उठाने वाला) और नाबकार (नालाएक़) कहते हैं, अ़स्र की नमाज़ छोड़ने वाले को ख़ाती (ग़लती करने वाला) और गुनाहगार कहते हैं, मग़रिब की नमाज़ छोड़ने वाले को काफ़िर और ना—शुक्रगुज़ार कहते हैं और इ़शा की नमाज़ छोड़ने वाले को ज़ियाँकार (नुक़सान करने वाला) कहकर पुकारते हैं।[53]

ह़दीस़ शरीफ़ में बे—नमाज़ी को तह़दीद फ़रमाते (यानी डराते) हुए जो कहा गया है कि ''बे—नमाज़ी क़ियामत के दिन क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़ल्फ़ (जैसे दुश्मनाने खुदा के साथ) होगा'' इसकी वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रत इमाम ग़ज़ाली रह़मतुल्लाहि अ़लैहि मुकाशफ़तुल क़ुलूब में तह़रीर फ़रमाते हैं कि (क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़ल्फ़ के साथ) नमाज़ छोड़ने वाला इसलिये उठाया जाएगा क्योंकि अगर उसने अपने मालो असबाब में मशग़ूलियत की वज्ह से नमाज़ छोड़ी होगी तो वो क़ारून की तरह़ है और

---

[52] मुकाशफ़तुल क़ुलूब, पेजः 380
[53] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्साः 1, पेजः 491

उसी के साथ उठाया जाएगा, अगर मुल्क की मशगूलियत की वजह से नमाज़ें न पढ़ीं तो वो फ़िरऔ़न की तरह़ है और उसी के साथ उठाया जाएगा और अगर वज़ारत की मशगूलियत उसे नमाज़ से रोकती है तो वो हामान की तरह़ है और उसी के साथ उठाया जाएगा और अगर तिजारत में लगे रहने की वजह से नमाज़ नहीं पढ़ी तो वो उबय बिन ख़ल्फ़ मक्का के ताजिर की तरह़ है उसी के साथ उठाया जाएगा।[54]

नमाज़ छोड़ने वाला मलऊ़न (ना–लाएक़) है

हज़रत अ़ब्दुर्रह़मान सफूरी अ़लैहिर्रह़मा नुज़हतुल मजालिस में तह़रीर फ़रमाते हैंः अल्लाह तआ़ला ने अपनी किसी नाज़िल की हुई किताब में फ़रमायाः नमाज़ का छोड़ने वाला मलऊ़न है और अगर उसका पड़ौसी भी उसके इस काम से राज़ी है तो वो भी मलऊ़न (ना–लाएक़) है (अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है) अगर मुझे अ़द्लो इन्साफ़ का लिहाज़ न होता तो मैं फ़रमा देता कि क़ियामत तक उसकी होने वाली नस्ल मलऊ़न है।[55]

बे–नमाज़ी की नहूसत

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम एक गाँव के क़रीब से गुज़रे जहाँ कस्रत से दरख़्त थे, नहरें जारी थीं, लोग बड़े ख़ुशह़ाल और मेहमान नवाज़ थे, लोगों ने आपका ख़ैर मक़दम (स्वागत) किया, ख़ूब ख़िदमत की। ह़ज़रत ईसा उन लोगों की इस क़द्र फरमाँबरदारी और माल की फ़राख़ी (ख़ूब होने) को देखकर

[54] मुकाशफ़तुल क़ुलूब, पेजः 383
[55] नुज़हतुल मजालिस, हिस्साः 1, पेजः 490

हैरत में पड़ गए फिर तीन साल के बाद उसी गाँव में आपका जाना हुआ तो आपने देखा कि दरख़्त ख़ुश्क हो चुके हैं (यानी सूख गए हैं) नहरें भी बन्द हैं और गाँव उजड़ चुका है। आप हैरान थे कि आख़िर ये तब्दीली (बदलाव) इतनी मुख़्तसर (थोड़ी) सी मुद्दत में कैसे आई? इतने में जिबराईल अमीन आए और कहाः ऐ रूहुल्लाह! यहाँ से एक बे–नमाज़ी का गुज़र हुआ था जिसने इन चश्मों (झरनों) से मुँह धोया था, उसकी नहूसत का ये असर हुआ कि दरख़्त मुरझा गए, नहरें ख़ुश्क हो गईं और गाँव वीरान हो गया। ऐ ईसा अ़लैहिस्सलाम! जब नमाज़ का छोड़ना दीन की बरबादी का सबब है तो दुनिया की तबाही का सबब भी बन सकता है।[56]

शैतान का साथी

हज़रत फ़क़ीह अबुल्लैस़ समरक़न्दी अ़लैहिर्रहमा फ़रमाते हैंः किसी ने शैतान से कहाः मैं चाहता हूँ कि तेरी तरह़ बन जाऊँ। शैतान ने कहाः नमाज़ पढ़ना छोड़ दे और कभी सच्ची क़सम न खाना[57] (तो बिल्कुल मेरी तरह़ हो जाएगा)

मन्हूस दिन

किसी ने क़सम खाई कि वो अपनी बीवी के पास मन्हूस दिन के अलावा कभी नहीं जाएगा (वरना उसकी बीवी पर तलाक़ है) फिर उ़लमा से उसने फ़तवा दरयाफ़्त किया। उ़लमा ने जवाब दिया कि दिन तो सारे ही बाइसे़ बरकत हैं लिहाज़ा तेरी औ़रत पर तलाक़ पड़ गई। लेकिन वो इस

[56] नुज़हतुल मजालिस, हिस्साः 1, पेजः 493
[57] नुज़हतुल मजालिस, हिस्साः 1, पेजः 490

जवाब से मुत्मइन न हुआ फिर वो ह़ज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दैरेनी अ़लैहिर्रह़मा के पास पहुँचा और उनसे इस मस्अला दरयाफ़्त किया। शैख़ ने उससे पूछाः क्या तूने आज नमाज़ पढ़ी है? उसने कहाः नहीं! आज नहीं पढ़ी। आपने फ़रमायाः जा! अपनी बीवी के पास क्योंकि तेरे लिये यही मन्हूस दिन है क्योंकि बन्दा जिस दिन नमाज़ नहीं पढ़ता वही उसके लिये मन्हूस दिन होता है।[58]

नमाज़ के ख़िलाफ़ इबलीस की तह़रीक

ह़ज़रत फ़क़ीह अबुल्लैस़ समरक़न्दी फ़रमाते हैं: जब नमाज़ का हुक्म नाज़िल हुआ तो इबलीस बौखला गया, उसने अपनी औलाद को जमा किया। इस मौक़े पर नमाज़ पढ़ने वालों को नमाज़ से दूर रखने की ये तरकीब बनाई कि नमाज़ियों को वक़्त पर नमाज़ पढ़ने से रोका जाए। इसका तरीक़ा ये है कि उन्हें हर तरफ़ से दुनियावी कामों के ज़रिये घेरा जाए और हर तरफ़ से पुकारा जाएः इधर देखो, उधर देखो, नीचे देखो, ऊपर देखो यानी किसी न किसी काम में लगा दिया जाए। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

क़ब्र में शोले भड़क उठे

एक आदमी ने अपनी बहन को दफ़्न किया तो उसकी रक़म की थैली ग़फ़लत में क़ब्र में गिर गई। जब सब लोग उसे दफ़्न करके चले गए तो उसे अपनी थैली याद आई चुनान्चे वो लोगों के चले जाने के बाद बहन की क़ब्र के पास पहुँचा और क़ब्र खोदने लगा ताकि थैली निकाल ले मगर ये

---

[58] नुज़हतुल मजालिस, ह़िस्साः 1, पेजः 491

देखकर उसकी हैरत की कोई इन्तिहा न रही कि क़ब्र में शोले भड़क रहे हैं। ये देखते ही उसने क़ब्र पर मिट्टी डाल दी और इन्तिहाई ग़मगीन हालत में रोता हुआ अपनी माँ के पास पहुँचा। माँ से पूछाः मेरी बहन की आदत कैसी थी कि उसकी क़ब्र में आग के शोले भड़क रहे हैं? ये सुनकर माँ भी रोने लगी और कहाः तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती करती थी और नमाज़ों को उनके वक़्त से देर करके पढ़ती थी।[59]

अल्लाहु अकबर! ये तो उसका हाल है जो नमाज़ों को उनके औक़ात (वक़्तों) से देर करके पढ़ा करती थी। ज़रा सोचिये! उन लोगों का क्या हाल होगा जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं?

बे–वुज़ू नमाज़ पढ़ने पर अज़ाब

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा शरहुस्सुदूर में तहरीर फ़रमाते हैं कि एक आदमी जिसे लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) की हैसियत से पहचानते थे, जब उसका इन्तिक़ाल हो गया और लोगों ने उसे दफ़्न कर दिया तो फ़िरिश्तों ने उससे कहा कि हम तुझे अज़ाब के सौ कोड़े मारेंगे। उसने कहाः क्यों मारोगे? मैं तो मुत्तक़ी था। फ़िरिश्तों ने कहाः अच्छा चल! पचास कोड़े ही मारेंगे। फिर वो आदमी बराबर बहस करता रहा कि मुझे क्यों मारोगे? यहाँ तक कि फ़िरिश्ते एक कोड़े पर आ गए और उन्होंने एक कोड़ा मार ही दिया जिससे पूरी क़ब्र आग से भर गई और वो जलकर ख़ाकिस्तर हो गया फिर उसे ज़िन्दा किया गया तो उसने

[59] शरहुस्सुदूर, पेजः 161, मुकाशफ़तुल क़ुलूब, पेजः 394

पूछा: अब ये बताओ कि तुमने मुझे ये कोड़ा क्यों मारा? फ़िरिश्तों ने जवाब दिया: तूने एक रोज़ बे–वुज़ू नमाज़ पढ़ ली थी, ये उसी की सज़ा है।

वाज़ेह़ (मालूम) रहे कि क़सदन (यानी) जान बूझकर बे–वुज़ू नमाज़ पढ़ना बाज़ फ़ुक़हा के नज़दीक कुफ़्र है यानी आदमी बे–वुज़ू नमाज़ पढ़ने से काफ़िर हो जाता है।

नमाज़ में सुस्ती पर मुसीबतें

ह़ज़रत इमाम ग़ज़ाली अ़लैहिर्रह़मा मुकाशफ़तुल क़ुलूब में तह़रीर फ़रमाते हैं कि जो नमाज़ में सुस्ती करता है अल्लाह तआ़ला उसे पन्द्रह मुसीबतों में मुब्तला कर देता है, उनमें से पाँच दुनिया में, तीन मौत के वक़्त, तीन क़ब्र में, तीन क़ब्र से निकलते वक़्त होती हैं।

दुनियावी मुसीबतें:

(1) उ़म्र से बरकत छीन ली जाती है।

(2) उसके चेहरे से सालिह़ीन (नेकों) की निशानी मिट जाती है।

(3) उसके किसी भी अ़मल का अल्लाह तआ़ला स़वाब नहीं देता।

(4) उसकी दुआ़ आसमान की तरफ़ बुलन्द नहीं होती (यानी कुबूल नहीं होती)

(5) नेकों की दुआ़ओं में उसका कोई ह़िस्सा नहीं होता (यानी अगर नेक आदमी भी उसके लिये दुआ़ करे तो उसकी दुआ़ नमाज़ में सुस्ती करने वाले के ह़क़ में कुबूल नहीं होगी)

मौत के वक़्त की मुसीबतें:

(1) वो ज़लील (बेइज़्ज़त) होकर मरेगा।

(2) भूखा मरेगा।

(3) प्यासा मरेगा, अगर्चे उसे दुनिया के तमाम समन्दर का पानी पिला दिया जाए फिर भी उसकी प्यास नहीं बुझेगी।

क़ब्र की मुसीबतें:

(1) क़ब्र तंग होगी यहाँ तक कि उसकी पसलियाँ एक दूसरे से पेवस्त हो जाएँगी (यानी मिल जाएँगी)

(2) क़ब्र में आग भड़काई जाएगी जिसके अंगारों पर वो रात दिन लोटता रहेगा।

(3) उसकी क़ब्र में एक अज़दहा मुक़र्रर कर दिया जाएगा वो कड़कदार बिजली जैसी आवाज़ में मय्यित से बात करेगा और कहेगा कि मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुझे नमाज़ें ज़ाएअ़ (बरबाद) करने के बदले सुबह से शाम तक डसता रहूँ। सुबह की नमाज़ के लिये सूरज निकलने तक, ज़ुहर की नमाज़ ज़ाएअ़ करने पर तुझे ज़ुहर से अ़स्र तक, अ़स्र की नमाज़ के लिये मग़रिब तक, मग़रिब की नमाज़ ज़ाएअ़ करने पर इशा तक और इशा की नमाज़ ज़ाएअ़ करने की वजह से तुझे सुबह तक डसता रहूँगा और जब वो अज़दहा मय्यित को डसेगा तो वो सत्तर हाथ ज़मीन में धँस जाएगा फिर इसी तरह़ क़ियामत तक उसको ये अ़ज़ाब होता रहेगा।

और जो मुसीबतें उसे क़ब्र से निकलते हुए ह़श्र के मैदान में झेलनी होंगी वो ये हैं:

(1) सख़्त ह़िसाब

(2) अल्लाह की नाराज़गी

(3) जहन्नम में दाख़िला

अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को ऐसे भयानक अन्जाम से बचाए।

जुमा की नमाज़ की फ़ज़ीलतें

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने अच्छी तरह़ वुज़ू किया फिर जुमा की अदायगी के लिये आया, ख़ुत्बा सुना और ख़ुत्बा के दौरान ख़ामोश रहा तो उसके उन गुनाहों की मग़फ़िरत हो जाएगी जो उस जुमा और दूसरे जुमा के दरमियान हैं और मज़ीद तीन दिन के (गुनाह) माफ़ किये जाएँगे।[60]

(2) रसूले रह़मत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जुमा (की नमाज़) कफ़्फ़ारा है उन गुनाहों के लिये जो उस जुमा और उसके बाद वाले जुमा के दरमियान हों और तीन दिनों के और। ये इसलिये कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः जो एक नेकी करेगा उसके लिये उसका दस गुना स़वाब है।[61]

जुमा छोड़ने पर वईदें

(1) नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन लोगों के बारे में फ़रमाया जो जुमा की नमाज़ में नहीं आतेः जी चाहता है कि अपने पीछे एक शख़्स को इमाम बनाऊँ जो लोगों को नमाज़ पढ़ाए और मैं ख़ुद नमाज़े जुमा छोड़ने वालों के घरों को आग लगाकर फूँक दूँ।[62]

---

[60] अबू दाऊद, ह़दीस़ः 1052
[61] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़दीस़ः 3381
[62] मुस्लिम शरीफ़, ह़दीस़ः 1517

(2) रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद हैः नमाज़े जुमा तर्क करने (यानी छोड़ने) से बाज़ आ जाओ वरना तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दी जाएगी और तुम ग़ाफ़िलीन (ग़फ़लत बरतने वालों) में कर दिये जाओगे। (मुस्लिम शरीफ़)

(3) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो बिला उ़ज़्र तीन जुमा छोड़ दे उसे अल्लाह के यहाँ मुनाफ़िक़ लिख दिया जाता है।[63]

(4) एक और रिवायत में है कि जो पै दर पै मुसलसल (लगातार) तीन जुमा छोड़ दे उसने इस्लाम को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है। (इह़याउल उ़लूम)

जमाअ़त की फ़ज़ीलत

(1) हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जमाअ़त की नमाज़ तन्हा नमाज़ पढ़ने से (स़वाब में) सत्ताईस दर्जा बढ़कर है।[64]

(2) रह़मते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने कामिल (मुकम्मल) वुज़ू किया फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये चला और इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी तो उसके गुनाह बख़्श दिये जाएँगे।[65]

(3) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये चालीस दिन नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़े और तकबीरे ऊला (पहली

[63] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़िस्साः 1, ह़दीस़ 425
[64] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़ः 1509
[65] सह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा, ह़दीस़ 1489

तकबीर) पाए उसके लिये दो आज़ादियाँ लिख दी जाएँगीः एक जहन्नम से, दूसरी निफ़ाक़ से।[66]

(4) महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने जमाअ़त से इ़शा की नमाज़ पढ़ी समझो आधी रात उसने क़ियाम किया (यानी इ़बादत की) और जिसने फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी समझो पूरी रात उसने क़ियाम किया।[67]

(5) हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैंः मैंने नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ये फ़रमाते हुए सुनाः बेशक अल्लाह तआ़ला जमाअ़त की नमाज़ को पसन्द फ़रमाता है।[68]

जमाअ़त छोड़ने पर वई़दें

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स दिन को रोज़े रखता है, रात को क़ियाम (इ़बादत) करता है मगर जुमा और जमाअ़त में नहीं आता तो वो दोज़ख़ में जाएगा।

(2) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मोमिन की बदबख़्ती और नामुरादी के लिये यही काफ़ी है कि मुअज़्ज़िन को अज़ान कहते हुए सुने और जमाअ़त में ह़ाज़िर न हो।[69]

---

[66] तिर्मिज़ी शरीफ़, ह़दीसः 241
[67] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीसः 1523
[68] मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीसः 5112
[69] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़िस्साः 3, ह़दीसः 16805

(3) नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः लोग जमाअ़त छोड़ने से बाज़ आ जाएँ वरना मैं ज़रूर उनके घरों को आग लगा दूँगा।[70]

(4) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अगर तुमने जमाअ़त छोड़ने वाले इस शख़्स की तरह अपने घर में नमाज़ पढ़ी तो तुम अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के तारिक (छोड़ने वाले) हो जाओगे और अगर तुमने अपने नबी की सुन्नत को छोड़ दिया तो तुम गुमराह हो जाओगे।[71]

(5) ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन अनस रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है, वो कहते हैं: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः ये सरासर ज़ुल्म व ज़्यादती, कुफ़्र व निफ़ाक़ की बात है कि आदमी अल्लाह के मुनादी की आवाज़ सुने जो उसे नमाज़ के लिये पुकार रहा हो लेकिन वो नमाज़ को न जाए।[72]

अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

(1) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु तआला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम! कौन सा अ़मल अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसन्द है? आपने फरमायाः वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।[73]

---

[70] सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़: 795
[71] मुस्लिम शरीफ़, ह़दीस़: 1520
[72] मुस्नदे अह़मद, ह़दीस़: 16032
[73] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़: 504

(2) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ना अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का सबब है और आख़िर वक़्त नमाज़ पढ़ना अल्लाह तआला की तरफ़ से अ़फ़्वो दरगुज़र का सबब है।[74]

(3) इन्हीं से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत आख़िर नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे आख़िरत की फ़ज़ीलत दुनिया के मुक़ाबले में है।[75]

(4) हजरत उ़बादा बिन साबित रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, वो फरमाते हैंः मैंने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ये फ़रमाते हुए सुनाः आप फरमाते रहे थेः अल्लाह तआला ने पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जिसने अच्छी तरह वुज़ू किया, वक़्त पर नमाज़ पढ़ी और दिल जमाकर अच्छी तरह रूकू और सजदा किया तो अल्लाह तआला ने ये वादा फ़रमाया है कि वो ऐसे आदमी को बख़्श देगा और जो ऐसा न करे उसके लिये कोई वादा नहीं है।[76]

(5) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जब बन्दा अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ता है तो उसकी नमाज़ आसमानों की तरफ़ जाती है और वो नूरानी शक्ल में होती है

[74] सुनने तिर्मिज़ी, ह़दीसः 172
[75] अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हिस्साः 1, ह़दीसः 569
[76] अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हिस्साः 1, ह़दीसः

यहाँ तक कि अ़र्शे इलाही तक जा पहुँचती है और नमाज़ी के लिये क़ियामत तक दुआ़ करती रहती है कि अल्लाह तेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए जैसे तूने मेरी ह़िफ़ाज़त की है और जब आदमी बे–वक़्त नमाज़ पढ़ता है तो उसकी नमाज़ काली शक्ल में आसमानों की तरफ़ चढ़ती है जब वो आसमान तक पहुँचती है तो उसे पुराने कपड़े की तरह लपेटकर पढ़ने वाले के मुँह पर मार दिया जाता है।[77]

नमाज़ें क़ज़ा करने का वबाल

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः जिसकी नमाज़ क़ज़ा हो गई समझो उसके अह्ल व माल जाते रहे यानी उसके घर वाले और उसकी दौलत सब बरबाद हो गए।[78]

(2) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी अल्लाह तआला नमाज़ और ज़िक्र कुबूल नहीं करता। उनमें से एक वो है जो वक़्त गुज़र जाने के बाद नमाज़ पढ़ता है।[79]

नमाज़ के बाज़ मसाइल अहा़दीस़ की रोशनी में

नमाज़ में इधर उधर देखने का अन्जाम

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः लोगों का क्या ह़ाल है? नमाज़ में आसमान की तरफ़ देखते हैं, इस ह़रकत से बाज़ आ जाएँ वरना उनकी बीनाई (आँख की रोशनी) छीन ली जाएगी।[80]

---

[77] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 391
[78] सहीह इब्ने हिब्बान, ह़दीस़ः 1468
[79] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 391
[80] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 708

(2) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला बन्दे पर उसकी नमाज़ की ह़ालत में तवज्जो फ़रमाता है जब तक बन्दा नमाज़ में दूसरी तरफ़ तवज्जो न दे लेकिन जब बन्दा दूसरी तरफ़ इल्तिफ़ात (ध्यान) करता है तो अल्लाह तआ़ला अपनी तवज्जो उसकी तरफ़ से हटा लेता है।[81]

(3) ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो आसमान की तरफ़ न देखे कि कहीं बीनाई (आँख की रोशनी) उचक न ली जाए।[82]

नमाज़ में इमाम से जल्दबाज़ी करने का अन्जाम

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः उस आदमी को डर नहीं लगता जो इमाम से पहले ही रूकू और सजदे से सर उठा लेता है?! कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तआ़ला उसका चेहरा या सर मस्ख़ (बिगाड़) करके गधे की तरह़ कर दे।[83]

(2) हुज़ूर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो लोग इमाम से पहले ही रूकू या सजदे से अपना सर उठा लेते हैं उनकी पेशानी शैतान के हाथ में है।[84]

---

[81] अबू दाऊद, ह़दीस़ः 910
[82] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़िस्साः 5, ह़दीस़ः 5298
[83] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 691
[84] मुस्नदुल बज़्ज़ार, ह़िस्साः 16, ह़दीस़ः 9404

नमाज़ में चोरी का अन्जाम

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः सबसे बड़ा चोर वो है जो नमाज़ में चोरी करता हो। सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः कोई नमाज़ में कैसे चोरी कर सकता है? फ़रमायाः नमाज़ की चोरी ये है कि आदमी पूरी तरह़ रूकू और सजदा न करे।[85]

(2) एक शख़्स को हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ते हुए देखा वो न तो रूकू पूरा करता था और न ही सजदा, उसका सजदा ऐसा था जैसे कोई जानवर ज़मीन से दाना चुगता है। इस जल्दबाज़ी की नमाज़ देखकर आपने फ़रमायाः "अगर ये इसी ह़ालत में मर गया तो मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मिल्लत (शरीअ़त) के अ़लावा किसी और मिल्लत पर मरेगा क्योंकि ये मेरी सिखाई हुई नमााज़ नहीं है।" (तिबरानी)

(3) ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला उस आदमी पर रह़मत की नज़र नहीं फ़रमाता है जो अपनी पीठ रूकू और सजदा के वक़्त सीधी नहीं करता है।[86]

(4) ह़ज़रत बिलाल रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है उन्होंने एक आदमी को देखा जो न रूकू पूरा कर रहा था और न सजदा। तो आपने फ़रमायाः अगर ये इसी ह़ालत में मर जाए

---

[85] सह़ीह़ इब्ने ह़िब्बान, ह़दीसः 1888
[86] मुस्नदे अह़मद, ह़दीसः 16326

तो ये ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मिल्लत (शरीअ़त) के अ़लावा किसी और मिल्लत पर मरेगा।[87]

नमाज़ियों को फलाँगने का वबाल

(1) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स जुमा के दिन लोगों को फलाँगते हुए आगे बढ़ेगा क़ियामत के दिन उसको जहन्नम जाने वालों का पुल बनाया जाएगा। (इससे अल्लाह की पनाह!)

यहाँ अगर्चे जुमा के दिन मुसल्लियों (नमाज़ियों) को फलाँगने पर वईद (फटकार) फ़रमाई गई है लेकिन इसका हुक्म आम है। किसी भी दिन नमाज़ियों को फलाँगते हुए आगे बढ़ने का यही हुक्म है।

नमाज़ी के आगे से गुज़रने का वबाल

(1) ह़ज़रत अबू ज़ुहैम रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला ये जान लेता कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने का क्या गुनाह है? तो चालीस साल तक खड़े होकर इन्तिज़ार करना गवारा कर लेता।[88]

(2) ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अगर तुममें से किसी को मालूम हो जाता कि अपने भाई की नमाज़ मे ख़लल डालते हुए उसके आगे से गुज़रने का गुनाह क्या है? जब कि वो अपने रब से मुनाजात (दुआ़)

---

[87] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़दीसः 3748
[88] सुनने अबू दाऊद, ह़दीसः 701

कर रहा है तो वो नमाज़ी के आगे से गुज़रने के मुक़ाबले उस जगह सौ साल खड़ा रहना ज़्यादा पसन्द करता।[89]

नोटः नमाज़ी को ख़ुद भी ऐसी जगह नहीं खड़ा होना चाहिये जहाँ से किसी के गुज़रने का इम्कान हो वरना वो ख़ुद भी गुनाहगार होगा।

सफ़ की ख़ाली जगह भरने का स़वाब

(1) ह़ज़रत आ़इशा रदियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते रह़मत भेजते हैं उन लोगों पर जो सफ़ की ख़ाली जगहों को पुर (मुकम्मल) कर देते हैं।[90]

(2) ह़ज़रत आइशा रदियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो आदमी सफ़ की ख़ाली जगहों को भर दे अल्लाह तआ़ला उसके दर्जे को बुलन्द फ़रमाएगा और जन्नत में उसके लिये घर तामीर फ़रमाएगा।[91]

(3) ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः कोई भी अल्लाह की बारगाह में उस आदमी के क़दम से पसन्दीदा जो चलकर सफ़ की ख़ाली जगह को भर दे।[92]

---

[89] मुस्नदे अह़मद, ह़दीस़ः 8824
[90] सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़ः 995
[91] अल–मोजमुल औसत लित्तिबरानी, ह़िस्साः 6, ह़दीस़ः 5797
[92] अबू दाऊद, ह़दीस़ः 543

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने किसी सफ़ को पुर (मुकम्मल) कर दिया तो अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से जोड़ देगा और जिसने सफ़ काट दी तो अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से काट देगा।[93]

सफ़ सीधी न करने का अन्जाम

(1) हज़रत नोमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई तो आपने देखा कि एक आदमी का सीना सफ़ से निकला हुआ है, आपने फ़रमायाः सफ़ों को सीधी करो वरना अल्लाह तुम्हारे दिलों में इख़्तिलाफ़ (बिगाड़) डाल देगा।[94]

(2) हज़रत बरा बिन आज़िब रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः तुम सफ़ टेढ़ी न करो वरना तुम्हारे दिलों में टेढ़ापन डाल दिया जाएगा।[95]

मोहतरम हज़रात! आप नमाज़ की अहमियत, उसकी फ़ज़ीलत, नमाज़ पढ़ने पर जो ख़ुशख़बरिया आई हैं और न पढ़ने पर जो फटकारें आई हैं वो सब पढ़ चुके हैं तो अब ये निहायत ही मुनासिब होगा कि मस्जिद की अज़मत, उसकी बुज़ुर्गी और मस्जिद आने जाने पर जो अज्र व सवाब है उसको भी पढ़ लें ताकि मस्जिदों से हमारा रिश्ता मज़बूत हो जाए और हम सब ढेरों नेकियों के हक़दार हो सकें।

---

[93] सुनने नसई, हदीसः 8191

[94] मुस्नदे अहमद बिन हम्बल, हदीसः 18458

[95] सुनने अबू दाऊद, हदीसः 664

दुनिया की सबसे बेहतरीन जगहें तो वो मस्जिदें

(1) हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है वो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला के नज़दीक दुनिया की सबसे बेहतरीन जगहें मस्जिदें हैं।[96]

नमाज़ के लिये चलने का स़वाब

(2) हजरत अबू मूसा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है वो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: लोगों में सबसे ज़्यादा नमाज़ के स़वाब का ह़क़दार वो है जो सबसे ज़्यादा दूर से चलकर आया हो और जो नमाज़ का इन्तिज़ार करता हो यहा तक कि वो इमाम के साथ नमाज़ पढ़ ले तो उस शख़्स से बढ़कर अज्र का ह़क़दार है जो नमाज़ पढ़े और सो जाए।[97]

(3) ह़ज़रत बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैं कि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: सख़्त अंधेरी रात में मस्जिद की तरफ़ चलने वालों को क़ियामत के दिन मुकम्मल नूर की ख़ुशख़बरी दे दो।[98]

(4) हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया: जो शख़्स अपने घर में तहारत करके फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के लिये मस्जिद में आए तो वो नमाज़ ही में रहता है जब तक वो घर लौटकर न जाए।[99]

---

[96] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़: 1560
[97] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़: 651
[98] सुनने अबू दाऊद, ह़दीस़: 561
[99] अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हिस्सा: 1, ह़दीस़: 451

(5) ह़ज़रत सलमान रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है वो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जो फ़ज्र की नमाज़ के लिये सुबह़ घर से निकला तो वो ईमान के झण्डे के साथ निकला।[100]

यानी नमाज़ के लिये मस्जिद जाने वाला और नमाज़ पढ़कर मस्जिद से घर आने वाला घर पहुँचने तक नमाज़ ही में रहता है।

अल्लाह की रह़मत के ख़ास ह़क़दार

(6) ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः अंधेरी रात में मस्जिद जाने वाले वही अल्लाह की रह़मत में ख़ास दाख़िल होने वाले हैं।[101]

मस्जिद आने वाला अल्लाह का मेहमान है

(7) ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पे इरशाद फरमायाः जो सुबह़ के वक़्त या शाम के वक़्त मस्जिद आता है अल्लाह तआला जन्नत में उसकी मेहमानी का एहतेमाम फ़रमाता है जब जब वो सुबह़ व शाम मस्जिद आता है।[102]

अल्लाह मस्जिद आने वालों की इ़ज़्ज़त फ़रमाता है

ह़ज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैंः रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जिसने अपने घर में अच्छी तरह वुज़ू किया फिर

---

[100] सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़ः 2319

[101] सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़ः 828

[102] सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस़ः 469

मस्जिद आया तो वो अल्लाह का ज़ाइर (दीदार करने वाले) की तरह है और अल्लाह पर ये हक़ है कि अपने ज़ाइर की इ़ज़्ज़त करे।[103]

बिला शुब्हा मस्जिद इ़ज़्ज़त की जगह है और ज़मीन पर सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली जगह है। हर मुसलमान को नमाज़ की अदायगी के लिये मस्जिद जाना ही है लेकिन साथ ही घर में भी नमाज़ पढ़नी चाहिये। देखें! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क्या फ़रमा रहे हैं?

घरों को नमाज़ से आबाद करो

(1) ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री से मरवी है वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का ज़िक्र किया जाता हो और उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया जाता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है।[104]

अल्लाह का ज़िक्र करने वाले समझो ज़िन्दा हैं और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल रहने वाले मुर्दे की तरह हैं।

(2) ह़ज़रत ज़ैद बिन स़ाबित से मरवी है वो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ऐ लोगो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो इसलिये कि आदमी की अफ़ज़ल नमाज़ वो है जो घर में हो सिवाए फ़र्ज़ नमाज़ों के।[105]

---

[103] अल–मोजमुल कबीर लित्तिबरानी, ह़िस्साः 6, ह़दीस़ः 6016
[104] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 6407
[105] सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ः 731

(3) हज़रत अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: जब तुममें से कोई मस्जिद में नमाज़ पढ़ ले तो उसे चाहिये कि अपने घर के लिये भी नमाज़ का कुछ हिस्सा मुक़र्रर कर ले कि अल्लाह तआला उसकी नमाज़ की बरकत से उसके घर में ख़ैर व भलाई पैदा फ़रमाएगा।[106]

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अपने घरों का इकराम (इज़्ज़त) करो अपनी कुछ नमाज़ों के ज़रिये।[107]

घरों में नमाज़ पढ़ना जहाँ बहुत सारे फ़ाइदों का ज़रिया है वहीं इसका एक फ़ाइदा ये भी है कि हमारे छोटे बच्चे और घर के दूसरे लोग हमें नमाज़ पढ़ता देखकर सीखेंगे और उनके दिलों में भी इबादत और बन्दगी का जज़्बा पैदा होगा।

---

[106] सहीह मुस्लिम, हदीस: 1858
[107] सहीह इब्ने खुज़ैमा, हदीस: 1143

ऑल इण्डिया तब्लीगे सीरत, पश्चिम बंगाल की दूसरी हिन्दी किताबें

S. No.	Book	Writer	Page
1	नमाज़ की अहमियत	मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीब	52
2	तौबा की अहमियत	मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीब	64
3	इल्मे दीन की अहमियत	मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीब	64
4	वो हममें से नहीं	मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीब	48
5	मुख़्तसर हयाते मुजाहिदे मिल्लत	मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीब	106
6	रिज़्के हलाल की अहमियत	अल्लामा अब्दुल मुबीन नोमानी साहब	32
7	औरत और हमारा मुआशरा	अल्लामा अब्दुल मुबीन नोमानी साहब	64
8	फ़ैज़ाने कुरआन	अल्लामा अब्दुल मुबीन नोमानी साहब	48
9	ईसाले सवाब की शरई हैसियत	मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ उकाड़वी अलैहिर्रहमा	40
10	ईद मीलादुन्नबी : सवाल व जवाब की रोशनी में	इंजीनियर मुहम्मद शाहिद अख़्तर	24
11	इल्मे ग़ैब	प्रोफ़ेसर मुहम्मद मसऊद	32

S. No.	Book	Writer	Page
12	ताज़ीमो तौक़ीर	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	24
13	सलामो क़याम	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	24
14	नई नई बातें	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	52
15	निस्बतों की बहारें	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	28
16	नर्मी व आसनी	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	16
17	रवादारी	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	24
18	औ़रत और पर्दा	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	16
19	लिबासे हुज़ूर	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	24
20	आख़िरी पैग़ाम	प्रोफ़ेसर मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी अ़लैहिर्रह़मा	08

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बंगाल की सरज़मीन पर तहरीक ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत तक़रीबन **1970** ई0 से मस्लके अह्ले सुन्नत व जमाअ़त की फ़िक्र और नज़रिये को बढ़ावा देने के लिये रहनुमा–ए–अह्ले सुन्नत, इमामुत्तारिकीन, सिराजुस्सालिकीन, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अ़ल्लामा शाह मुहम्मद हबीबुर्रहमान क़ादिरी हाशिमी अ़लैहिर्रहमा के ख़लीफ़ा हज़रत हाजी मुद्दस्सिर हुसैन हबीबी साहब क़िब्ला की सर–बराही में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

मक़सद

- मुसलमानों में मज़हबी रूजहान पैदा करना, उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब की तरग़ीब देना।
- दिलों में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी व इश्क़ का जज़्बा बेदार करना।
- मुसलमानों के दरमियान इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार करना।
- स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माज़ूर हो चुके उ़म्र को पहुँचे हुए लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।
- इस्लाम और मुसलमानों के तअ़ल्लुक़ से जो ग़लतफ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका सुबूतों की रोशनी में माकूल जवाब देना।
- आम–फ़ह्म ज़ुबान में आम लोगों के लिये मज़हबी किताबें छापना।
- जगह जगह दीनी व मज़हबी मज्लिसें करना।
- क़ुदरती आफ़तों या फ़सादों के सबब तबाह–हाल लोगों की मदद करना।

अल्लाह के करम से ये काम तीन डिपार्टमेंट

1– तालीम, 2– तब्लीग़ और 3– किताबों की पब्लिशिंग के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

Published by

MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA

ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, WEST BENGAL (INDIA)
6, Taltalla Lane, Kolkata - 700014, Mobile :09830367155

Email Us : tableegh.e.seerat@gmail.com
info.tableeghseerat@gmail.com
Visit Us : www.tableeghseerat.com

Subscribe Us for Free E-News Letter at www.tableeghseerat.com
Join Us : TableeghSeerat Group at Facebook
https://www.facebook.com/groups/TableeghSeerat

Created by : Digital Graphics, Mob. 9830829976